राज्य अध्याय 16

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए **प्रार्थना** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **2 इतिहास 32,33,34 और 36**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (2इतिहास 32,33,34 और 36) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(4) प्रेरितों के काम 20:28**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।

(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28 – इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की देख-रेख करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 4:17ब-25**

परिचय। **रोमियों 4:17ब-25** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों के अध्याय 4:17अ में, पौलुस यह साबित करता है कि बाइबल में हमेशा विश्वास के द्वारा न्याय ही उद्धार का एकमात्र सच्चा तरीका रहा है। रोमियों 4:17ब-22 में, वह अब्राहम के चरित्र के द्वारा उसके विश्वास को दर्शाता है ताकि हमें मालूम हो कि वास्तव में सच्चा विश्वास क्या होता है। रोमियों 4:23-25 में वह आज के विश्वासियों को अब्राहम के विश्वास का उदाहरण सिखाता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 4:17ब-25 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन-सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लिखें। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें)
आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताऐँ कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

4:17ब-22

खोज 1. **अब्राहम के विश्वास की चार विशेषताएँ हैं।**

(1) विश्वास की पहली विशेषता रोमियों 4:17 में पाई जाती है।
अब्राहम के विश्वास का उद्देश्य जीवित परमेश्वर था।

अब्राहम ने सिर्फ विश्वास नहीं किया। उसने किसी पर विश्वास किया। उसने (बाइबल के) जीवित परमेश्वर पर और जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उससे की थी, उस पर विश्वास किया। उसने यह विश्वास किया कि परमेश्वर सामर्थी है और वही मरे हुओं को जीवन दे सकता है। उसका मानना था कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसकी पूर्ति के समान ही बहुत भली है।

(2) विश्वास की दूसरी विशेषता रोमियों 4:18 से है।
अब्राहम के विश्वास का उद्देश्य सीधे आशा से सम्बन्धित था।

अब्राहम के विश्वास और उसकी आशा दोनों ने साथ मिलकर कार्य किया। उसका यह विश्वास था कि वह इस बात के प्रति आश्वस्त था कि उसकी क्या आशा, वह क्या चाहता है। उसका विश्वास था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को निश्चित रूप से पूरा करेगा। हालाँकि अब्राहम जानता था कि उसकी इन परिस्थितियों ने शारीरिक रूप से सन्तान उत्पन्न करने को असम्भव बना दिया है, फिर भी वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करता था और उसे आशा (उम्मीद) थी कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को ज़रूर पूरा करेगा। यह केवल परमेश्वर का ही उद्देश्य नहीं था कि अब्राहम कई राष्ट्रों का पिता बने (रोमियों 4:11), परन्तु अब्राहम का भी यही उद्देश्य (दृढ़ विश्वास) था कि वह कई राष्ट्रों का पिता बने (रोमियों 4:18)। अब्राहम ने परमेश्वर के इस उद्देश्य को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उसने अपनी आशा की निश्चितता पर विश्वास किया, ताकि ऐसा न हो कि की गई प्रतिज्ञा असफ़ल हो जाए।

(3) विश्वास की तीसरी विशेषता रोमियों 4:19-21 में पाई जाती है।
अब्राहम के विश्वास की ताकत परमेश्वर के स्वभाव के बारे में उसके दृष्टिकोण से निर्धारित होती है।

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि उसके और उसकी पत्नी के एक पुत्र उत्पन्न होगा, और परमेश्वर उस पुत्र के द्वारा संसार के सभी परिवारों को आशीषित करेगा। लेकिन क्योंकि वह और उसकी पत्नी बहुत ही बूढ़े हो चुके थे, मानवीय और शारीरिक रूप से ऐसा कहना असम्भव-सा लग

रहा था कि यह प्रतिज्ञा पूरी होगी या नहीं। फिर भी, अब्राहम ने अपनी परिस्थितियों को अपने विश्वास को निर्धारित करने की अनुमति नहीं दी। उसने अपने विश्वास को कमज़ोर किए बिना अपनी परिस्थितियों का सामना किया। वह ऐसा कैसे कर सकता है? रोमियों 4:20-21 में लिखा है कि उसका विश्वास परमेश्वर के प्रति उसके दृष्टिकोण से निर्धारित किया गया। क्योंकि वह परमेश्वर को सर्वशक्तिमान और विश्वासयोग्य के रूप में देखता था, उसने सन्देह को जगह ही नहीं दी।

परमेश्वर द्वारा बार-बार की गई प्रतिज्ञाओं से उसका विश्वास और मज़बूत हो गया। जितनी बार उसने सर्वशक्तिमान और विश्वासयोग्य परमेश्वर को महिमा दी, उतनी बार उसका विश्वास मज़बूत हुआ। उसका दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है।

(4) विश्वास की चौथी विशेषता रोमियों 4:22 से है।

अब्राहम के विश्वास का परिणाम यह हुआ, कि परमेश्वर ने उसके इस दृढ़ विश्वास को (उत्तरदायी धार्मिकता को, माना) धार्मिकता गिना।

उसका विश्वास केवल एक बौद्धिक विश्वास नहीं था। यह आश्चर्यकर्म करने के लिए ज़रूरी विश्वास भी नहीं था। अब्राहम का विश्वास उद्धार का विश्वास था, यानि वह विश्वास जो उद्धार या न्याय की ओर ले जाता है। उसका विश्वास आने वाले मसीह के सम्बन्ध में, परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा को दर्शाता है। जिससे मसीह की मृत्यु और पुरूत्थान के द्वारा संसार के सभी परिवारों (राष्ट्रों) को आशीष मिलेगी। उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। और वह पूरी तरह से उस धार्मिकता पर निर्भर था जो यीशु मसीह के उद्धार के द्वारा प्राप्त होने वाला था, न कि मानवीय कार्यों के द्वारा।

4:23-25

खोजें 2. **आज के विश्वासियों का अब्राहम के विश्वास से निम्नलिखित सम्बन्ध है।**

1 कुरिन्थियों 10:11 में पौलुस इस्राएल के साथ जो कुछ हुआ उनके बारे में कहता है, "ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थी : और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।" यहाँ रोमियों 4:23-24 में पौलुस कहता है, जो कुछ अब्राहम के लिए लिखा गया, *वह सिर्फ उसी के लिए नहीं, वरन् हमारे लिए भी है*। अब्राहम का विश्वास न केवल उसी के लिए धार्मिकता गिना गया, वरन् आज भी सभी विश्वासियों का ऐसा विश्वास धार्मिकता के रूप में गिना जाएगा।

हालाँकि, पुराने नियम में अब्राहम की परिस्थितियाँ और नए नियम में हमारी परिस्थितियाँ दोनों भिन्न हैं, लेकिन अब्राहम और हमारे विश्वास के बीच समानता यह दर्शाती है कि पुराने नियम में विश्वास नए नियम के विश्वास के समान था।

(1) पहली समानता - अब्राहम और हमारे विश्वास के बीच पहली समानता यह है कि अब्राहम के विश्वास का उद्देश्य बाइबल का परमेश्वर था (रोमियों 4:3; 4:24)। अब्राहम और हम, दोनों ही बाइबल के परमेश्वर को मानते हैं, जो विश्वास को धार्मिकता के रूप में गिनते हैं (मानते हैं)। (तुलना करें - रोमियों 3:29-30)।

(2) दूसरी समानता - यह है कि अब्राहम का विश्वास उस परमेश्वर पर था जो मृतकों को जीवन देता है (रोमियों 4:17)। हमारा विश्वास उस परमेश्वर पर है जिसने यीशु मसीह को मृतकों में जी उठाया (रोमियों 4:17)।

(3) तीसरी समानता – यह है कि अब्राहम का विश्वास एक दृढ़ विश्वास था कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को अवश्य पूरा करेगा (रोमियों 4:21)। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि यीशु मसीह की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के द्वारा परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पहले ही पूरी कर चुका है (रोमियों 4:25)।

हालाँकि, हमें परमेश्वर के उद्धार के इतिहास को ध्यान में रखना चाहिए। अब्राहम और हमारी स्थिति के बीच मुख्य अन्तर यह है कि अब्राहम से प्रतिज्ञा की गई थी और उस वचन की पूर्ति हमें प्राप्त हुई। उसका विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर केन्द्रित था जो निश्चित रूप से पूरी होगी और हमारा विश्वास यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर के उद्धार के सिद्ध कार्य के साथ इस प्रतिज्ञा को पूरा करने पर केन्द्रित है।

इसलिए पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:11 में लिखा, "परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थीः और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं, लिखी गई हैं।" और यही कारण है कि इब्रानियों के लेखक ने लिखा है कि यीशु मसीह अब युग के अन्त में एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे (इब्रानियों 9:26)। अब्राहम युग के आरम्भ में रहता था जबकि हम युगों के अन्त या उसकी पूर्णता में रहते हैं।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियों 4:17ब–25 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

4:17

प्रश्न 1. **परमेश्वर के संदर्भ में अब्राहम का विश्वास किस पर था? उस परमेश्वर का अर्थ क्या है जो "मरे हुओं को जीवन देता है" और "उन बातों का नाम, ऐसे लेता है कि मानो वे हैं"?**

ध्यान दें।

(1) अब्राहम उस परमेश्वर पर विश्वास रखता था, "जो मरे हुओं को जीवित कर देता है"।

रोमियों 4:17 में परमेश्वर की उन विशेषताओं का वर्णन किया गया है जो अब्राहम के विश्वास का विशेष उद्देश्य, तब थीं जब उसने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसका न्याय हुआ। अब्राहम सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास करता था जो मृत्यु और जीवन दोनों पर अधिकार रखता है और मृतकों को जीवित कर सकता है। यह परमेश्वर को संसार के सभी "देवताओं" से अलग करता है। वह न केवल सृष्टिकर्ता और प्रत्येक वस्तु को बनाए रखने वाला है, परन्तु वह मृतकों को जिलानेवाला और जितने लोग पृथ्वी पर रह चुके हैं उन सभी का न्याय करेगा (यूहन्ना 5:28–29; इफिसियों 1:19–20)।

क्योंकि उसके पास पूरी तरह से मृतकों को जिलाने की सामर्थ्य है, उसके पास अधमुओं को जिलाने की थी सामर्थ्य है। अब्राहम यह विश्वास करता था कि परमेश्वर उन्हें सन्तान उत्पन्न करने के लिए सक्षम बनाएगा और सारा गर्भधारण कर पाएगी, भले ही वह दोनों शारीरिक रूप से बूढ़े और आधे मृत हो चुके थे।

(2) अब्राहम उस परमेश्वर पर विश्वास रखता था जो "उन बातों का नाम, ऐसे लेता है (जिनका अभी तक अस्तित्व नहीं हैं), कि मानो वे हैं (जो अस्तित्व में आ चुकी हों)।"

पौलुस यह नहीं कहता कि परमेश्वर अभी तक उन वस्तुओं को बनाने में व्यस्त है जो देखी हुई न हो (इब्रानियों 11:3)। परमेश्वर ने सातवें दिन तक सृष्टि की रचना पूरी कर ली थी (उत्पत्ति 2:1-2)।

वह कहता है कि परमेश्वर जो बातें हैं ही नहीं (जो अभी तक पाई नहीं जाती, जिनका अस्तित्व नहीं है) उनका नाम ऐसे लेता है (कहता है) मानो वे हैं (उनका अस्तित्व है)! "जो बातें है ही नहीं" यह दर्शाता है कि जिनकी योजना परमेश्वर ने पहले से ही बना रखी थी, जो भविष्य में पूरी होने वाली हैं, लेकिन अभी तक उनका कोई अस्तित्व दिखाई नहीं देता (उदाहरण के लिए, कि अब्राहम और सारा के बुढ़ापे में सन्तान उत्पन्न होगी)। क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही यह तय कर लिया था कि ये बातें भविष्य में पूरी होंगी, वह उनका नाम लेता है, जैसे कि वह पहले ही हो चुकी हैं, इसलिए यह निश्चित है कि वे पूरी होगी!

इस प्रकार अब्राहम के लिए, परमेश्वर की प्रतिज्ञा (भविष्य की घटनाओं के सम्बन्ध में) उनकी पूर्ति के समान भली हैं। विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय है, जो वास्तव में पूरी होगी (तुलना करें - इब्रानियों 11:11)।

4:18

प्रश्न 2. **अब्राहम ने कैसे आशा रखी?**

ध्यान दें। रोमियों 4:18 में लिखा है, अब्राहम ने निराशा में आशा रखकर (परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर) विश्वास किया (परमेश्वर के स्वभाव : उसकी सामर्थ्य और विश्वासयोग्यता पर)। "निराशा में भी" शब्द उसकी मानवीय परिस्थितियों का उल्लेख करते हैं जो पद 19 में वर्णित है। उसकी मानवीय परिस्थितियों की सारी आशा समाप्त हो सकती है। लेकिन परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा ने उसकी आशा को जीवित रखा!

"आशा रखकर विश्वास किया" का अर्थ यह नहीं है कि अब्राहम को अपनी आशा पर विश्वास था। अब्राहम के विश्वास का मूल उद्देश्य "उसकी अपनी आशा" नहीं थी, लेकिन उसका विश्वास परमेश्वर पर था! "अब्राहम की आशा" एक पूरी होने वाली इच्छा नहीं थी, लेकिन "एक दृढ़ आशा थी कि निश्चित रूप से कुछ होने जा रहा था।" अब्राहम की आशा और विश्वास दोनों साथ कार्य कर रहे थे। अब्राहम के विश्वास का मूल उद्देश्य स्वयं परमेश्वर था। अब्राहम का विश्वास परमेश्वर के स्वभाव पर आधारित था और उसकी आशा सर्वशक्तिमान परमेश्वर (परमेश्वर कर सकता है) और उसकी विश्वासयोग्यता (परमेश्वर यह करेगा) पर थी। परमेश्वर ने बुढ़ापे में उन्हें एक पुत्र देने की प्रतिज्ञा की थी और उसका विश्वास था कि जो प्रतिज्ञा की गई है परमेश्वर उसे निश्चित रूप से पूरा करेगा।

4:19-21

प्रश्न 3. **अब्राहम का विश्वास किस प्रकार मज़बूत हुआ?**

ध्यान दें।

(1) अब्राहम का परमेश्वर के प्रति दृष्टिकोण उसके विश्वास को दर्शाता है।

पद 19 में लिखा है, "विश्वास में निर्बल हुए बिना अब्राहम ने अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा को जाना।" अपनी परिस्थितियों को नज़रअन्दाज़ करने की कोशिश करने के बजाय, उसने जानबूझकर अपनी परिस्थितियों का सामना किया और वह यह भली-भाँति जानता था कि उसके साथ-साथ उसकी पत्नी का शरीर भी मरा हुआ-सा है। शारीरिक रूप से वे दोनों सन्तान उत्पन्न करने के लिए बहुत ही बूढ़े हो चुके थे (उत्पत्ति 17:17;18:11)।

लेकिन उसकी परिस्थितियाँ उसको कमज़ोर नहीं बना पाईं। वह अपने विश्वास में दृढ़ रहा, क्योंकि उसने अपने विश्वास को परमेश्वर पर बनाए रखा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह नहीं किया।

पद 20-21 में लिखा है कि अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर दोहरा विचार करके कभी-भी सन्देह नहीं किया (डगमगाया नहीं) क्योंकि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर और विश्वासयोग्यता की ओर अपनी दृष्टि को लगाए रहा। वह पूरी तरह से आश्वस्त था कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में सामर्थी है। उसके दृढ़ विश्वास का रहस्य इस पर था कि परमेश्वर *कौन* है और परमेश्वर ने *क्या* कहा है।

(2) परमेश्वर द्वारा बार-बार की जाने वाली प्रतिज्ञा के कारण अब्राहम का विश्वास दृढ़ हुआ।

पद 20 यह भी बताता है कि परमेश्वर द्वारा बार-बार की जाने वाली प्रतिज्ञा के कारण अब्राहम का "विश्वास दृढ़ हुआ" (उत्पत्ति 12:1-3; 15:4-6,18-21; 17:1-21)। इसने अब्राहम को ताक़त दी और उसे दृढ़ बनाया।

(3) परमेश्वर को महिमा देने के कारण अब्राहम का विश्वास दृढ़ हुआ।

पद 20-21 में लिखा है, "उसने विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की, और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में सामर्थी है।" अब्राहम के विश्वास की सामर्थ्य उसके व्यक्तिगत या उसके कार्यों पर निर्भर नहीं करती, परन्तु परमेश्वर को महिमा देना यह सुनिश्चित करता है कि जो प्रतिज्ञा उसने की है वह उसे पूरा करने में सक्षम है और ऐसा करेगा भी।

4:22

प्रश्न 4. **"यह (उसका विश्वास) उसके लिए धार्मिकता गिना गया" का अर्थ क्या है?**

ध्यान दें। अब्राहम का विश्वास "उसके लिए धार्मिकता" गिना जाने का अर्थ यह नहीं है कि *अब्राहम का विश्वास करना कोई कार्य* था यह उसके *स्वयं के कार्य* के लिए धार्मिकता गिना गया। अगर ऐसा होता तो अब्राहम परमेश्वर के सामने डींग (घमण्ड) मार सकता था कि इसका न्याय उसके स्वयं के कारण ही हुआ है (यानि उसके विश्वास के कार्य के द्वारा) (रोमियों 4:2)

अब्राहम के विश्वास को कभी भी किसी भी प्रकार के धार्मिक कार्य के रूप में नहीं माना जा सकता है, क्योंकि "अनुग्रह के कारण उसके विश्वास को धार्मिकता गिना गया" (रोमियों 4:16)। उसके विश्वास को "परमेश्वर द्वारा दी गई भेंट" के रूप में धार्मिकता गिना गया, न कि "परमेश्वर के कार्य के रूप में"

(रोमियों 4:4)! "गिना जाने" का अर्थ मुआवज़े या दान से नहीं है! यूनानी शब्द "logizó" एक तकनीकी (न्यायिक) शब्द है जिसका अर्थ "थोपना" कारण ठहराना, "गिनना" और "मानना" है। इसलिए ऐसा न हो कि हम मुआवज़े या दान का हवाला देते हुए "गिना जाने" शब्द का उपयोग करना शुरू कर दें, यह कहना ज़्यादा बेहतर होगा कि अब्राहम का विश्वास "उसकी धार्मिकता के रूप में माना या जताया गया"। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने अपनी दृष्टि में अब्राहम को 100 प्रतिशत धर्मी ठहराया और उसे 100 प्रतिशत धर्मी माना।

"यह (उसका विश्वास) उसके लिए धार्मिकता गिना गया" का अर्थ ठीक उसी प्रकार है कि जैसे "केवल उसके विश्वास के कारण उसका न्याय करना"। जबकि "धार्मिकता" यीशु मसीह में विश्वासियों के लिए परमेश्वर की आवांछित भेंट है, उनका "विश्वास" एक साधन ("खाली हाथ") है जिसके द्वारा विश्वासियों को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का दान मिलता है (अर्थात्, यीशु मसीह की 100 प्रतिशत पूर्ण और सिद्ध धार्मिकता जिसे उसने हमारे लिए अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा अर्जित किया।)

इसके अलावा, यह ऐसा ही विश्वास नहीं है जिसके द्वारा न्याय होता है। अब्राहम का विश्वास किसी भी धर्म के किसी भी "देवता" पर सामान्य विश्वास नहीं था, लेकिन एक बहुत ही विशेष उद्देश्य के साथ एक विशिष्ट विश्वास था। उसका विश्वास बाइबल के परमेश्वर और आने वाले मसीह (यीशु मसीह) की प्रतिज्ञा पर था, जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा पृथ्वी के सभी परिवारों (राष्ट्रों) को आशीषित करेगा (उत्पत्ति 12:3; उत्पत्ति 22:18)। उसका विश्वास परमेश्वर की सर्वशक्तिमान सामर्थ्य और उसकी विश्वासयोग्यता पर था। और उसके विश्वास का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना था।

4:25

***प्रश्न 5.* यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों पर हमारा न्याय क्यों निर्भर करता है?**

ध्यान दें। लोगों का न्याय परमेश्वर के अनुग्रह (रोमियों 3:24) और विश्वास (यीशु मसीह और उसके उद्धार के कार्य में) के द्वारा होता है (रोमियों 3:23)। इसलिए *उनका न्याय यीशु की मृत्यु* (क्रूस पर बहाए गए उसके लहू के द्वारा) (रोमियों 5:9) और *उसके मृतकों में से जी उठने के द्वारा हुआ* (रोमियों 4:24-25)। यीशु मसीह *हमारे न्याय के लिए मृतकों में से जी उठे,* मतलब, हमारे पापों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए ताकि परमेश्वर हमारा न्याय कर सके। और यीशु मसीह मृतकों में से जी उठा ताकि *हमारे न्याय को पक्का कर सके*। इसलिए हमारे पुनरुत्थान के लिए मसीह की मृत्यु का उसके पुनरुत्थान के अलावा कोई प्रभाव नहीं हो सकता है। मरे हुओं में से यीशु मसीह का पुनरुत्थान यह साबित करता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह द्वारा दिए हमारे पापों के प्रायश्चित के बलिदान को स्वीकार कर लिया है। यीशु मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने को अलग नहीं किया जा सकता। उसकी मृत्यु न्याय करती है और उसका जी उठना न्याय को वास्तविकता बनाता है।

मृत उद्धारकर्ता का कोई प्रभाव नहीं होता है। जो भविष्यद्वक्ता अभी तक अपनी कब्र में मृत पड़े हैं उनका कोई प्रभाव नहीं होता। इसलिए कोई अन्य धर्म किसी व्यक्ति का न्याय नहीं कर सकता। यीशु मसीह एकमात्र उद्धारकर्ता है जो अपनी *मृत्यु के द्वारा* एक विश्वासी के पाप को दूर करता है (1 पतरस 2:24) और परमेश्वर के साथ उसका मेल कराता है (1 पतरस 3:18) और जी उठने के द्वारा न्याय करता है (रोमियों 4:24-25) और उसे नया जीवन देता है (रोमियों 6:4)।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आइये हम आपस में सोच विचार करके रोमियों 4:17ब–25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. रोमियों 4:17ब–25 में लिखें हुए संभव अनुप्रयोगों के उदाहरण।

4:17. परमेश्वर मृतकों और अधमरे लोगों को जीवन देता है। परमेश्वर को यह अनुमति दें कि यीशु मसीह और उसके उद्धार के कार्यों को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण करने के द्वारा वह आपकी आत्मा को अनन्त जीवन दे। परमेश्वर को अपने शरीर को नई ताक़त और कार्य करने की क्षमता देने की अनुमति दें, ताकि आप वह कर सकें जो आप पहले कभी न कर पाए हों।

4:17. परमेश्वर उन बातों का नाम, ऐसे लेता है (जिनका अभी तक अस्तित्व नहीं हैं), कि मानो वे हैं (जो अस्तित्व में आ चुकी हों)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर बिना किसी संदेह के विश्वास करें, क्योंकि परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसकी पूर्ति के समान ही बहुत भली है।

4:11,18. बाइबल के परमेश्वर के लक्ष्य को अपना लक्ष्य बनाएँ।

4:18. परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करें और उनके पूरा होने की आशा या उम्मीद को कभी न छोड़ें।

4:19–20. अपनी परिस्थितियों को (चाहे वह कितनी भी मुश्किल क्यों न हो) अपने विश्वास के ऊपर हावी होने की अनुमति न दें। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर बार–बार ध्यान लगाकर परमेश्वर को आपके विश्वास को दृढ़ करने की अनुमति दें।

4:20–21. निरन्तर बढ़ते रहें और परमेश्वर के स्वभाव को बेहतर रूप से जानने की कोशिश करते रहें क्योंकि परमेश्वर के प्रति आपका दृष्टिकोण आपके विश्वास को दर्शाता है।

4:23–24. अपने आपको लगातार यह याद दिलाते रहें कि पुराने नियम में पाए गए परमेश्वर के वचन न केवल पुराने नियम के समय में रहने वाले लोगों के लिए हैं बल्कि वह वचन नए नियम के समय के लोगों के लिए भी हैं (इस प्रकार आपके लिए भी) (2 कुरिन्थियों 1:20)!

4:25. अपने आपको लगातार यह याद दिलाते रहें कि यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा हम धर्मी ठहराए गए हैं और उसके पुनरूत्थान ने इस बात को साबित करके पक्का कर दिया है।

2. रोमियों 4:17ब–25 में लिखें हुए व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैंने यह महसूस किया कि मेरे विश्वास की दृढ़ता परमेश्वर के प्रति मेरे दृष्टिकोण से निर्धारित होती

है। इसलिए मैं यह दृष्टिकोण बनाए रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और उसने जो प्रतिज्ञा की, *उसे वह पूरा करेगा,* और यह दृष्टिकोण भी कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और जो प्रतिज्ञा उसने की उसे वह पूरा *कर सकता है*। मुझे इसका भी एहसास है कि मैं अपने विश्वास से सशक्त हो सकता हूँ। मुझे उस समय सामर्थ्य मिलती है जब मैं परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं को पकड़े रहता हूँ जो परमेश्वर ने मुझसे बाइबल में की हैं और मैं इस बात से आश्वस्त हूँ कि जो प्रतिज्ञाएँ उसने की हैं उन्हें पूरा करने में वह सक्षम है (इफिसियों 3:20)।

मैंने यह महसूस किया कि मेरे और अब्राहम के विश्वास में समानताएँ हैं। मैं भी जीवित परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ। मैं भी उस परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ जो मुर्दों को जिलाता हैं। उसने मुर्दों में से यीशु मसीह को जिलाया। और मैं परमेश्वर द्वारा अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा पर भी विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह के द्वारा जो मर गया और फिर जी उठा, परमेश्वर पृथ्वी पर रहने वाले परिवारों को आशीष दे रहा है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 4:17-25 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 4:17-25 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 1,2,5 और 8** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(5) कलीसिया में महिमा : इफिसियों 3:20-21।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 15:1-7 में दिये गये **"खोई भेड़"** के दृष्टान्त और लूका 15:11-32 में दिये गये **"उड़ाऊ पुत्र"** के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।